डेली कॉलेज, जूनियर स्कूल

हिंदी सामूहिक कविता पाठ – 2018-19

कक्षा V B

इतिहास की परीक्षा

(हास्य कविता)

कड़ी मेहनत सम्मान द्वारा पुरस्कृत होती है। – **लूथर कैंपबेल**

इतिहास की परीक्षा थी उस दिन, चिंता से हृदय धड़कता था,
थे बुरे शकुन घर से चलते ही, बायाँ हाथ फड़कता था।

मैंने सवाल जो याद किए, वे केवल आधे याद हुए,
उनमें से भी कुछ स्कूल तलक, आते-आते बरबाद हुए।

पर्चा हाथों में पकड़ लिया, आँखे मूंदी टुक झूम गया,
पढ़ते ही छाया अंधकार, चक्कर आया सिर घूम गया।

ओ प्रश्न-पत्र लिखने वाले, क्या मुँह लेकर उत्तर दें हम,
तू लिख दे तेरी जो मर्जी, ये पर्चा है या [illegible]।

गीता कहती है कर्म करो, फल की चिंता मत किया करो,
मन में आए जो बात उसी को, पर्चे पर लिख दिया करो।

मेरे अंतर के पाट खुले, पर्चे पर कलम चली चंचल,
ज्यों किसी खेत की छाती पर, चलता हो हलवाहे का हल।

मैंने लिखा पानीपत का, दूसरा युद्ध था सावन में,
जापान जर्मनी के बीच हुआ, अट्ठारह सौ सत्तावन में।

लिख दिया महात्मा बुद्ध, महात्मा गांधी जी के चेले थे,
गांधी जी के संग बचपन में, वे आँख-मिचौली खेले थे।

राणा प्रताप ने गौरी को, केवल दस बार हराया था,
अकबर ने हिंद महासागर, अमरीका से मँगवाया था।

महमूद गजनवी उठते ही, दो घंटे रोज नाचता था,
औरंगजेब रंग में आकर, औरों की जेब काटता था।

Scanned by CamScanner

'इस तरह अनकों' भावों से, फूटे भीतर के फव्वारे,
जो-जो सवाल थे याद नहीं, वे ही पर्चे पर लिख मारे।

हो गया परीक्षक पागल-सा, मेरी कॉपी को देख-देख,
बोला इन सब छात्रों में, बस होनहार है यही एक।

औरों के पर्चे फेंक दिए, मेरे सब उत्तर छाँट लिए,
सौ नंबर देकर बाकी के, सारे नंबर काट लिए।

– ओम प्रकाश आदित्य

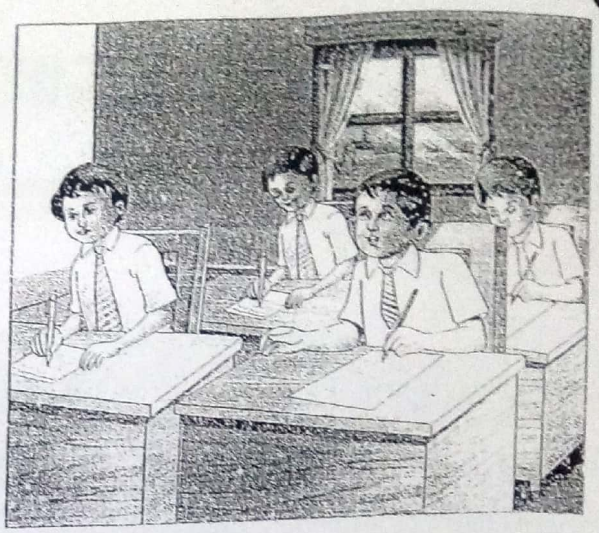

जीवन मूल्य : कठिन परिश्रम और सकारात्मक सोच ही सफलता की कुंजी है।

Scanned by CamScanner